इकाई 15 स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन और सौ दिनों के सुधार

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद:

- आपको सुदृढ़ीकरण आंदोलन के बारे में पता लगेगा तथा यह भी कि इसने चीनी राज्य की सुरक्षा में कैसे योगदान दिया,
- आपको यह भी मालूम हो जायेगा कि तोंग झी शासकों ने नागरिक प्रभुत्व एवं प्रशासन को स्थापित करने के लिये कैसे-कैसे प्रयास किये,
- आप सुदृढ़ीकरण आंदोलन के दूसरे चरण के बारे में भी जान जायेंगे,
- आप पुनर्स्थापन एवं स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलनों के प्रभाव को जान सकोगे,
- आपको सौ दिनों के सुधार, इसके क्षेत्र तथा इसकी असफलता की भी जानकारी हो सकेगी।

15.1 प्रस्तावना

आधुनिक चीन के इतिहास में 19वीं सदी एक महत्वपूर्ण काल था। साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रसार के साथ-साथ आन्तरिक संकट के बढ़ने के कारण चिंग राज्य एवं समाज सुधारों के कार्यक्रम की ओर अग्रसर हुआ। 19वीं सदी के दौरान ये सुधार कार्यक्रम 1860 तथा 1870 के दशकों में तोंगझी पुनर्स्थापना के स्वरूप में वास्तविक तौर पर प्रस्तावित किये गये कार्यक्रमों को भी लांघ गये। ये सधार कार्यक्रम स्वयं सदढ़ीकरण आंदोलन के नाम से जाने गये। 1858 में त्येनसिन की संधि करने के बाद पश्चिमी शक्तियों ने शांति की नीति का अनुसरण किया। पश्चिमी देशों की इस नीति के कारण चिंगराज्य को कुछ समय मिल गया जिससे वह ताइपिंग की समस्या का हल कर सकता था और विदेशियों तथा विद्रोही कृषकों द्वारा उत्पन्न की गई समस्याओं की ओर भी अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता था। चिंग राज्य को मज़बूत करने के उद्देश्य से जो सुधार कार्यक्रम शुरू किये गये वे 19वीं सदी के अन्त तक चीनी समाज के व्यापक सुधार के प्रयास में परिवर्तित हो गये। 1898 के सुधार आंदोलन ने एक

तरह से 20वीं सदी के प्रारम्भ में उठने वाले क्रान्तिकारी विप्लव की आधारशिला रखी और चीनी साम्राज्यिक तन्त्र को धराशायी होने के साथ ही इन सुधार प्रयासों का समापन हुआ। इस इकाई में स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन तथा सौ दिन के सुधार के अनेक पहलुओं का विवेचन किया गया है।

15.2 स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन : प्रथम चरण

19वीं सदी के मध्य में ताइपिंग विद्रोह और दो अफीम युद्धों के द्वारा यूरोपीय शक्तियों के प्रहार से उत्पन्न हुए आन्तरिक संकट की चुनौतियों का मजबूती से सामना करते हुए चिंग शासन ने राज्य को मजबूत करने के लिये साहसिक तरीके से सुधार के कार्यक्रम की घोषणा की। इस काल का उल्लेख तोंगझी पुनर्स्थापन के नाम से किया जाता है और उसके दो नीति विषयक तत्व थे। तोंगझी सम्राट की शासन उपाधि थी और उसने 1861 में चीनी सिंहासन को प्राप्त किया था। तोंगझी का शासन 1861-1874 तक चला। उसकी नीति के दो पक्ष इस प्रकार थे :

1) चिंग शक्ति को पुनः स्थापित करना (चुंग-सिंग)
राज्य की शक्ति एवं शान-शौकत को पुनः स्थापित करना प्रमुख उद्देश्य था और यह कन्फ्यूशियस समाज में निहित नियमों के द्वारा किया गया। पुनर्स्थापन के विचार में कुछ भी नया नहीं था। यह भी एक वास्तविकता है कि चीनी इतिहास में इस तरह के बहुत से प्रयास पहले भी हो चुके थे। इस तरह के पुनर्स्थापनों ने राजवंश एवं परम्परागत व्यवस्था में पुनः एक बार अन्तरिम तौर पर विश्वास एवं समर्पण पैदा किया। इन पुनर्स्थापना में सबसे महत्वपूर्ण पुनर्स्थापन वेस्टर्न झाऊ का 9वीं सदी ई.पू. का था। प्रथम सदी ई. का हान पुनर्स्थापन और 8वीं सदी ई. का तांग पुनर्स्थापन भी महत्वपूर्ण थे।

2) स्वयं सुदृढ़ीकरण (जिंग इयांग)
इस नीति के अन्तर्गत सीमित तौर पर आधुनिकीकरण करना था और इस नीति का प्रारम्भ हथियार उद्योगों के आधुनिकीकरण से किया गया। 1870 तथा 1880 के दशकों के दौरान इस नीति के अनुसार उद्योग, संचार और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों का भी आधुनिकीकरण किया गया।

15.2.1 पुनर्स्थापन तथा सुदृढ़ीकरण के निर्माता

सम्राट हवेन फेंग का भाई राजकुमार गोंग (1833-1898) तथा सार्वजनिक निर्माण मन्त्रालय एवं नागरिक कार्यों के मन्त्रालय का अध्यक्ष बेन जियांग इन कार्यक्रमों के मुख्य निर्माणकर्ता थे। प्रांतीय स्तर पर उनके पास अति योग्य अधिकारी थे जिन्होंने इस कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की। इन सब में सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी जेंग गुओ फेन था (1811-1872) जिसने ताइपिंग विद्रोह को कुचलने में मदद की थी। सन् 1860 में ताइपिंग के विद्रोह को कुचलने के लिये वह शाही आयुक्त था।

जुओ ज़ौंग तांग (1812-1885) नाम का एक और अधिकारी था वह ताइपिंग के विद्रोह को दबाने के समय प्रकाश में आया था। इस अधिकारी ने आधुनिक कम्पनियों की स्थापना एवं कृषि अर्थव्यवस्था पुनःस्थापित करने में निर्णायक भूमिका अदा की।

पुनर्स्थापन करने वालों में लि होंग-झांग (1823-1901) भी एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व था। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में साम्राज्यवादी शक्तियों के साथ चीन के संबंध में उसने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन अधिकारियों का भरपूर समर्थन प्रांतीय नेताओं तथा अधिकारियों के द्वारा किया गया। ये सभी अधिकारीगण परीक्षा प्रणाली की उत्पत्ति थे। उन्होंने कन्फ्यूशियस शिक्षा को प्राप्त किया था और इसी के कारण वे सामाजिक व्यवस्था तथा राज्य की कन्फ्यूशियस अवधारणा को बनाये रखने के लिये समर्पित थे। इस बात को याद रखने की जरूरत है कि सामाजिक एवं वैचारिक आधार को कन्फ्यूशियसवाद के द्वारा सुनिश्चित किया जाता था और इसी के साथ-साथ प्रस्तावित किये जाने वाले सुधार का फैलाव भी इसी के द्वारा सुनिश्चित किया गया।

19वीं सदी के मध्य में अनेकों पर्यवेक्षकों ने चीनी जनता की सामान्य निर्धनता पर टिप्पणियां

की थी। यांग्जी नदी की घाटी का विवरण निम्नलिखित पंक्तियों में जरनल ऑफ दी नार्थ चाइना ब्रांच ऑफ दि रोयल एशियाटिक सोसाइटी (1865) में किया गया है – "लहलहाते खेत निर्जन उजाड़ में परिवर्तित हो गये थे : शहर खंडहर बनकर रह गये थे। कियांग-नान, कियांग-सी और चैखांग नदियों के मैदानों में मानव कंकाल बिखरे पड़े थे, इन मैदानों की नदियां शवों के भरे रहने से दूषित हो गई थीं, दूर-दराज के पर्वतों पर रहने वाले जंगली जानवर भागकर भूमि पर विचरण करते फिरते थे, और इन्होंने अपनी गुफाओं को रेगिस्तान बने नगरों के कूड़े-करकट के ढेरों में बना लिया था ··· भूमि की जुताई करने के लिये कोई हाथ न बचा था, और अहितकारी वस्त्रों ने जब तक बीमार उद्योग को ठीक किया जाये तब तक जमीन को ढक लिया था।

15.2.2 कृषि अर्थव्यवस्था का पुनर्स्थापन

कृषि अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करना एक प्राथमिकता थी सरकार के पास खर्च करने के सीमित साधन थे और इस से भी अधिक मजबूरी यह थी कि सरकार कृषकों में भौतिक उपलब्धियों के लिये प्रेरणा पैदा करने में असमर्थ थी। यह विचार न तो राष्ट्रीय सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिये था और न उत्पादन में। राज्य की वित्तीय अवस्थाओं और जनता के जीवन यापन के बीच एक संतुलन कायम करने का प्रयास किया गया और यही कारण था कि एक बार फिर राजनीतिक अर्थव्यवस्था के कन्फ्यूशियस सिद्धान्तों पर जोर दिया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा निम्नलिखित बड़े लक्ष्यों पर बल दिया गया:

अ) कृषि योग्य क्षेत्रों का प्रसार करना,

ब) सार्वजनिक कार्यों का प्रसार करना, और

स) भू-कर में कमी करना।

अ) कृषि योग्य क्षेत्रों का प्रसार करना

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में राजनीतिक उथल-पुथल के दौर में काफी बड़ी मात्रा में भूमि का परित्याग कर दिया गया था। ऐसा ग्रामीण आबादी के विस्थापन के कारण हुआ था। जैसे ही राजनीतिक उथल-पुथल का दौर समाप्त हुआ वैसे ही हुनान जैसे प्रांत में पुनः आबादी को बसाने के लिये प्रयास किये जाने लगे। इस प्रदेश में ऐसा विस्थापित सैनिकों को खेती के लिये जमीन देकर किया गया। किसानों को अधिक सम्पन्न एवं सिंचित क्षेत्रों की ओर बसने के लिये उत्साहित किया गया। उदाहरण के लिये, जियांगशी प्रांत में जनसंख्या 6 महीने के संक्षिप्त समय में 8000 से बढ़कर 40,000 हो गई। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि स्वतः हुई थी, किन्तु चिंग सरकार के अधिकारियों ने गृहनिर्माण के कानूनों के द्वारा भी इसे प्रोत्साहित किया। समूह संगठनों को प्रोत्साहित करना तथा बीज, अनाज एवं औजारों का वितरण करने के लिये कृषि बन्दोबस्त कार्यालयों को स्थापित किया गया।

लेकिन इस नीति के परिणाम असमान थे। जियांगशू, अन हुई, फूजईयान तथा झेन जियांग जैसे प्रांतों में पहले अधिक किसानों के पास छोटे-छोटे खेत थे जिनका क्षेत्रफल एक हेक्टेयर से भी कम था। उदाहरण के लिये, झेन जियांग, जियांगशू प्रांतों में ताइपिंग विद्रोह के दौरान जमींदारों का सफाया हो गया था केवल कृषक भू-स्वामी छोड़ दिये गये थे। लेकिन पुनर्स्थापन के साथ भूमि को मूल स्वामी को वापस लौटा दिया गया। बड़े नौकरशाहों तथा सैन्य अधिकारियों के भी अधीन बड़ी-बड़ी भूमि आ गई। अब भू-स्वामित्व पर जोर देने की ओर एक स्पष्ट प्रवृत्ति का उदय हुआ।

ब) सार्वजनिक कार्यों का प्रसार

अकाल का सामना करने के प्रयास के तौर पर सुरक्षित अनाज भंडारों की मरम्मत की गई और कुलीनों की सहायता से नये अनाज भंडारों का निर्माण किया गया। नालों एवं नहरों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था। झिली, शांतुंग, शैनशी और सिहोन जैसी विशाल योजनाओं का प्रारम्भ जलचाप कार्यों की मरम्मत तथा बाढ़ग्रस्त भूमि को ठीक करने के लिये किया गया। यद्यपि यह पहचान लिया गया था कि उत्तर चीन की मैदानी कृषि के स्थायित्व के लिये मुख्य खतरा येलो नदी की लहरों से था, इसको नियन्त्रित करने के लिये प्रयास किये गये किन्तु वे योजना के स्तर तक ही रह गये थे।

स) भू-कर में कमी

जन-आंदोलन का मुख्य निशाना करों पर होता था। ऐसा अनुमान किया गया है कि तोंगझी शासन के दौरान करों में 30 प्रतिशत की कमी की गई थी। इस सन्दर्भ में जो महत्वपूर्ण

निर्णय लिया गया वह यह था कि जियांगसू जैसे अधिक प्रभावित क्षेत्र में भूमि कर में स्थायी तौर पर कमी की गई।

जैसा कि अन्य सुधारों के मामले में था, वैसा ही भूमि करों के सुधार में भी हुआ और कर सुधारों का लाभ आम किसान तक न पहुंच सका। चांदी के दामों में हुई वृद्धि के कारण उनको जो लाभ हो सकता था वह न हुआ। न भूमि के प्रमाणों को दर्ज किया गया और न ही कर व्सवस्था को प्रकाशित किया गया। इस कमी के कारण स्थानीय मजिस्ट्रेट एवं कुलीन पुरानी दरों पर कर की वसूली करते रहे। प्रस्तावित भू-कर संबंधी सुधारों में सबसे गम्भीर कमी यह रह गई कि भू-कर में कटौती के साथ-साथ लगान में कटौती नहीं की गई। ऐसे बहुतसंख्यक कृषकों को कर सुधार के क्षेत्र से अलग कर दिया गया जो जमींदारों के अधीन किसान थे।

कृषि अर्थव्यवस्था को पुनः स्थापित करने के प्रयासों से शायद ही किसानों की दुर्दशा में सुधार हुआ हो। क्योंकि किसानों का बड़े भू-स्वामियों द्वारा किये जाने वाला व्यापक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शोषण जारी रहा।

गैर-कृषि अर्थव्यवस्था के ऐसे दूसरे बहुत से पक्ष थे जिन पर बहुत कम ध्यान दिया गया। पुनः स्थापित सरकार के पास व्यापार एवं वाणिज्य को पुनर्जीवित तथा विकास को प्रोत्साहित करने की कोई नीति न थी। इस ओर उसने बहुत कम ध्यान दिया।

समुद्र द्वारा पीकिंग की किलेबन्दी करने तथा खाद्य आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिये साधनों के रूप में परिवहन को भी सुधारने के प्रयास किये गये थे। स्टीम जहाजों ने धीरे-धीरे समुद्र में चलने वाली बड़ी नावों का स्थान ले लिया। 1872 ई. में चइना मर्चेन्ट्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी का प्रारम्भ किया गया। अन्तर्देशीय जल परिवहन के लिये स्टीम जहाजों, रेलवे निर्माण और तार व्यवस्था को लागू करने का चीन के अन्दर काफी विरोध हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता था कि इन नवीन परिवर्तनों के कारण कन्फ्यूशियस सामाजिक व्यवस्था की गम्भीर रूप से अवहेलना की जायेगी।

सारांश में इस काल के दौरान की आर्थिक नीति बुनियादी तौर पर प्रतिक्रियावादी थी। कथित और अकथित दोनों तौर पर इसका उद्देश्य परम्परागत राज्य की कृषि आधारशिलाओं को कुछ मामूली परिवर्तन के साथ पुनः स्थापित करना एवं शक्तिशाली बनाना था।

15.2.3 राज्य एवं नागरिक प्रभुत्व का पुनर्स्थापन

कृषि एवं आर्थिक सुधारों के साथ-साथ, तोंगझी पुनर्स्थापन ने राज्य प्रभुत्व एवं प्रशासन को पुनः स्थापित करने पर ध्यान केन्द्रित किया। राज्य प्रभुत्व एवं प्रशासन को 19वीं सदी ई. के पूर्वार्द्ध में काफी कमजोर कर दिया गया था। योग्य लोगों की भर्ती करने पर बल देकर नौकरशाही को सुधारने के पर्याप्त प्रयास किये गये। परीक्षा के महत्व को यह कहकर समझाया गया कि शक्ति एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करने का यह एक मात्र मार्ग है। डिग्रियों एवं पदों को बेचने में कटौती करने के प्रयास किये गये। इससे पूर्व के दशकों में पदों एवं कार्यालयों की बिक्री एक खतरनाक स्थिति में पहुंच गई थी। परीक्षा को अब एक ऐसी प्रक्रिया माना गया था जो नागरिक प्रशासन को उच्च स्तर बनाने में योगदान करती थी। इस परीक्षा का लक्ष्य आदर्श तथा संर्वागीण योग्यता वाले अधिकारियों को भर्ती करना था। नौकरशाही को कन्फ्यूशियसवादी सिद्धांतों के प्रति सजग रखने के प्रयास किये गये। क्वींग ने तेजी से नौकरशाही के आर्थिक, वैधानिक एवं सामाजिक विशेषाधिकारों को पुनः स्थापित किया और ऐसा उनकी स्थिति को सुदृढ़ करने के प्रयास में किया गया। ताइपिंग विद्रोहों से जो क्षेत्र प्रभावित हुए थे उनमें भूमि को उनके मूल स्वामियों को दे दिया गया। करों में कमी करने का सीधा लाभ कुलीनों को मिला।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक पुनर्निर्माण को कन्फ्यूशियसवादी ज्ञान पर बल देने के साथ वैचारिक पुनर्निर्माण के द्वारा सुदृढ़ किया गया। स्कूलों एवं ज्ञानपीठों को पुनः खोल दिया गया और ऐसा जनता के एक बड़े भाग में कन्फ्यूशियवादी शिक्षा का प्रसार करने के प्रयास के रूप में किया गया।

15.2.4 पश्चिम की ओर नई कूटनीति

दोनों अफीम युद्धों में पराजय के बावजूद चीन के अधिकतर अधिकारियों एवं कुलीनों का यह विश्वास था कि पश्चिमी शक्तियों को वापस धकेला जा सकेगा। राजकुमार गोंग, बेन

शियांग, लि होंग झांग तथा अन्य कुछ नेताओं ने यह महसूस किया कि विदेशी अधिपत्य को रोकने की आवश्यकता थी। इसलिये जनवरी 20, 1861 को **जोंगली यामेन** (Zongli-Yamen) की स्थापना की गई। जोंगली यामेन की भूमिका को बहुत से बन्दरगाहों में विदेशी व्यापार को नियंत्रित तथा निरीक्षण करने की एक संस्था के रूप में देखा गया। पश्चिमी शक्तियों के साथ चीन के सभी प्रकार के संबंधों पर इसका सामान्य नियन्त्रण था। यहां पर व्हीटन के अनुवाद **"ऐलीमेंट ऑफ इन्टरनेशनल लॉ"** का उल्लेख करना उचित ही होगा। यह अनुवाद 1864 में चीनी भाषाओं में एक अमेरीकी मिशनरी डब्लू.ए.पी. मार्टिन ने किया था। चीनियों के लिये यह अनुवाद बड़ा ही उपयोगी साबित हुआ क्योंकि इसकी बदौलत जोंगली यामेन पश्चिम को संधियों की अनुल्लंघनीयता का अनुसरण कराने को बाध्य कर सका अर्थात् जोंगली यामेन ने चीन सरकार के लिये संधियों को सुरक्षा की दीवार बनाने की कोशिश की और उन्होंने पश्चिमी शक्तियों को संधियों की शर्तों को मानने तक सीमित रखा।

15.2.5 स्वयं सुदृढ़ीकरण

पुनर्स्थापन से घनिष्ठ रूप से जुड़ी सीमित आधुनिकीकरण की औपचारिक नीति थी। इस नीति को **यांगवू ड़ोंग** (विदेशी मामलों का आंदोलन) कहा जाता था। इस शब्द का उपयोग कूटनीति से लेकर औद्योगिक यन्त्र तक किसी भी विदेशी चीज के लिये किया जाता था। इस नीति की सबसे पहले, अभिव्यक्ति हथियारों के उद्योग की स्थापना के रूप में हुई। इसी का अनुसरण करते हुए खदानों, संचार एवं कपड़ा उद्योग का विकास किया गया और यह सब 1870 के दशक से "सम्पत्ति एवं शक्ति" **(फ्यू क्यांग)** को प्राप्त करने के उद्देश्यों के कारणवश हुआ था। **जी क्यांग** का प्रचार घरेलू नीति के कारणों के लिये किया गया। ऐसा इसलिये किया गया जिससे कि साम्राज्यिक सैनिक बलों की योग्यता को जन आंदोलनों का दमन करने तथा विदेशियों का विरोध करने के लिये सुनिश्चित किया जा सके। यह घरेलू एवं विदेशी संबंधों में राष्ट्रीय पुनर्जीवन प्राप्त करने का एक प्रयास था। यह मान्यता बढ़ती जा रही थी कि शक्ति को बनाये रखने के लिये पश्चिम से कुछ तकनीकी प्राप्त करने की आवश्यकता थी। सुझाओ के विद्वान फेंग-गुई-फेन (1808-1874) ने परम्परागत राज्य का कड़ा समर्थन करते हुए पश्चिमी तकनीकी के उपयोग करने की आवश्यकता पर निबंधों की एक श्रृंखला लिखी। फेंग के विचार को उन सभी अधिकारियों तथा कुलीनों में पर्याप्त समर्थन मिला जो परम्परागत व्यवस्था को बनाये रखने के लिये चिन्तित थे।

पश्चिमी तकनीकी को तर्क संगत बनाने तथा उसके लागू करने को उचित ठहराने के लिये उन दिनों चीन में यह मुहावरा "बुनियाद के लिये चीनी ज्ञान और व्यवहारिक इस्तेमाल के लिये पश्चिमी ज्ञान" काफी लोकप्रिय हो चला था। इस विचार के द्वारा ऐसी किसी आलोचना का सामना करने का प्रयास किया गया जिसके अनुसार प्रस्तावित परिवर्तनों को कन्फ्यूशिय संस्कृति और समाज के मूलभूत मूल्यों एवं मानकों का विरोधी बताया जा सकता था।

चीन को जिस सैनिक पराजय के रूप में अपमान का सामना करना पड़ा था, उसके आधार पर सेना के आधुनिकीकरण को प्रारम्भिक प्राथमिकता प्रदान की गई। सैन्य आधुनिकीकरण के निम्नलिखित दो मुख्य पक्ष थे:

1) सेनाओं को पुनः संगठित करना और तेजी से बढ़ने वाली क्षेत्रीय सेनाओं की राज्य के प्रति वफादारी को पुनः लागू करना,

2) चीन को सैनिक तौर पर पश्चिम के हथियारों एवं अस्त्र-शस्त्रों के बराबर करना।

आधुनिक हथियारों की आश्यकता की पहचान करने और चीन में उनके निर्माण के कारणवश 1865-67 के बीच चार बड़े शस्त्रागारों को स्थापित किया गया।

1) जियांग नान शस्त्रागार को जेंग गुओं-फेन ने 1865 में शुरू किया,

2) लि होंग-झांग के द्वारा नानकिंग शस्त्रागार को शुरू किया गया,

3) फूझाओ जहाज कारखाने की स्थापना 1867 में जुओज़ोंग तांग के द्वारा की गई,

4) 1867 में त्येनसिन में एक शस्त्रागार की स्थापना मांचू वंश के चोंग-हाउ ने तकनीकी सलाहकार के रूप में एक अंग्रेज मीडोज के साथ की।

सेनाओं को पुनः संगठित करने के प्रथम लक्ष्यों को पूरा न किया जा सका क्योंकि यह तभी सम्भव था जबकि वर्ग की संरचनाओं एवं मूल्यों में व्यापक परिवर्तनों को शामिल किया जाता

और किंग इस तरह के परिवर्तनों को करने का इच्छुक न था।

आधुनिक शस्त्रागारों ने प्रथम बार चीन में यान्त्रिक उत्पादन का प्रारम्भ किया। लेकिन फिर भी इसके कारण तकनीकी क्रान्ति न हो सकी। न ही यह पूंजीपति वर्ग के उदय का वाहक बन सका। ये शस्त्रागार निश्चित रूप से राज्य द्वारा संचालित थे और इस कारण से किसी उद्योग का उत्थान नहीं हो सका। कुल मिलाकर शस्त्रागार के उद्योग सरकारी दफ्तरों के रूप में कार्य करते थे। बढ़ते घाटे, अक्षमता एवं भ्रष्टाचार के कारण ये उपक्रम तबाह हो गये।

औद्योगीकरण नीति के प्रथम चरण से न कृषि अर्थव्यवस्था में ह्रास के प्रवाह को रोका जा सका और न ही परम्परागत कुटीर उद्योगों के क्षेत्र में यह कोई राहत दे पाया।

तोंग वेन क्वान

यद्यपि राइफलों, तोपों तथा जहाजों का निर्माण करने के लिये पश्चिमी तकनीकी को उधार लेने पर मुख्य रूप से बल दिया गया था, लेकिन कुछ दूसरी ऐसी प्रवृत्तियां थी जिनका विकास भी उसी समय हुआ था। जोंगली यामेन को चलाने के लिये दुभाषियें की आवश्यकता थी। विदेशी भाषा को समझने की मांग को पूरा करने के लिये स्कूलों का प्रारम्भ किया गया (**तोंग-वेन क्वान**) सबसे पहले इनका प्रारम्भ पीकिंग में किया गया और वहां पर इन स्कूलों में अंग्रेजी, रूसी और फ्रेंच को पढ़ना-लिखना सिखाया गया। कैन्टन एवं शंघाई में भी इस तरह के केन्द्रों को खोला गया। कुछ ऐसे भी स्कूल थे जो शस्त्रागारों से जुड़े थे। ये संस्थाएं तकनीकी विषयों एवं पश्चिमी भाषाओं की जानकारी उपलब्ध कराती थीं। धीरे-धीरे इन स्कूलों में दूसरे पश्चिमी विषयों को भी लागू कर दिया गया। इस प्रवृत्ति के दूरगामी परिणामों को न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि परिवर्तन, सुधार एवं आधुनिकीकरण पर बदलते चीनी विचारों में भी देखा जाना चाहिये।

बोध प्रश्न 1

1) 1861-1874 के बीच तोंगझी पुनर्स्थापन के दो बड़े नीति अवयवों की पांच पंक्तियों में विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

2) राज्य प्रभुत्व एवं प्रशासन को पुनः स्थापित करने के लिये तोंगझी पुनर्स्थापन के द्वारा किये गये प्रयासों को दस पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) लगभग पांच पंक्तियों में तोंग वेन क्वान पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

....

....

....

15.3 दूसरा चरण

एक बार लोकप्रिय विद्रोहों का दमन कर दिये जाने पर 1870 के दशक के बाद हथियारों का निर्माण संभवतः कम हो गया। **यांगवू** आंदोलन के दूसरे चरण का प्रारम्भ कर दिया गया था। लि होंग झांग तथा दूसरों का उद्देश्य था कि व्यापारियों की संपत्ति और व्यापारिक कुशलता का इस्तेमाल नये उद्योग धन्धों को लगाने में किया जाये।

जैसा कि लि होंग झांग ने 1872 में लिखा था कि उनका उद्देश्य चीन की ''सम्पत्ति एवं शक्ति'' (फू-क्यांग) में वृद्धि करना था। लि ने **क्वान दू शांग बान** (सरकार का निरीक्षण और व्यापारियों की कार्यवाहियां) शब्द का प्रयोग उन सभी उपक्रमों के लिये किया जिनका प्रारम्भ कर दिया गया था। इस नीति के एक भाग के रूप में 1872 में चाइना मर्चेन्ट्स स्टीम नेवीगेशन कम्पनी का प्रारम्भ किया गया। व्यक्तिगत पूंजी को कम्पनी की ओर आकर्षित करने के प्रयास किये गये यद्यपि प्रारम्भ के कुछ वर्षों में यह प्रयास सफल रहा किन्तु अधिक समय न चल सका। 1877 तक शेंग श्वान हॉय (1844-1916) के अधीन कम्पनी नौकरशाही के हितों का प्रतिनिधित्व करने लगी। खान उद्योग का विकास इस तरह से हुआ कि वह हथियारों के उद्योग की जरूरतें पूरी करता, वहीं वह दूसरी ओर उन विदेशियों का सामना करने में भी सफल हुआ जो चीन में खान खोलने की मांग कर रहे थे। 1876-1885 के बीच 10 खानों को शुरू किया गया और ये सभी खाने **क्वान दू शांग बान** व्यवस्था के अधीन थी। ये सभी लि-होंग झांग के नियन्त्रण में थी।

कपड़ा उद्योग में सरकारी एवं व्यक्तिगत उपक्रमों के बीच निश्चय ही कुछ प्रतियोगिता थी। शंघाई कपड़ा मिल का प्रारम्भ 1880 के दशक के अन्तिम वर्षों में हुआ लेकिन इसके अन्दर उत्पादन 1890 में ही हो सका। 1860 के दशक के अन्त में चीन के सहायक पूंजीपतियों ने विदेशी कम्पनियों के सहयोग से अनेक कपड़ा कम्पनियों का प्रारम्भ किया था। प्रथम पूर्ण रूपेण चीनी कपड़ा मिल का प्रारम्भ 1872 में कैन्टन क्षेत्र में एक रेशमी व्यापारी चेन क्यूई-चॉन के द्वारा किया गया था। यह मिल सिर्फ रेशमी कपड़े की मिल थी सरकारी अधिकारियों के द्वारा उसकी सफलता को बहुत नहीं सराहा गया। चीन के अधिकारियों का प्राइवेट उद्योग धन्धों के प्रति क्या दृष्टिकोण था इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति एक स्थानीय अधिकारी के द्वारा दिया गया यह बयान ''मशीनों का प्रयोग करने का अधिकार केवल सार्वजनिक अधिकारियों को है'' करता है।

यांगवू-यांग नीति के कारण संचार व्यवस्था के क्षेत्र में रेल एवं डाक व्यवस्था के रूप में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। सन् 1863 में 27 विदेशी कम्पनियों के द्वारा शंघाई एवं सुझाओं के बीच रेलवे लाइन बनाने का प्रस्ताव किया गया। लेकिन इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया गया जिससे कि विदेशियों के द्वारा आगे किये जाने वाले अवैध अधिकार को रोका जा सके। लेकिन सीमित आधुनिकीकरण के कारण अनुकूल स्थिति पैदा हो जाने के कारण इस स्थिति में परिवर्तन आ गया। 1881 में 11 किलोमीटर लम्बी प्रथम रेलवे लाइन को काइपिंग माइनिंग कम्पनी के लिये कोयला ढुलाई करने के लिये बनाया गया। 1870-71 में विदेशी कम्पनियों ने हांगकांग शंघाई एवं व्लादि वोस्तक को डाक तार लाइन से जोड़ दिया। राष्ट्रीय डाक सेवाओं को लागू करने का विरोध जहां एक ओर सरकारी अधिकारियों की ओर से हुआ, वहीं विदेशियों, बैंकों तथा दूसरी अन्य कम्पनियों ने भी इसका विरोध किया क्योंकि उनके अपने स्वार्थ प्राइवेट डाक व्यवस्था में निहित थे। अधिकारियों को यह भय हुआ कि यदि उनकी सेवाओं को निरस्त्र कर दिया गया तब औपचारिक प्रभुत्व खतरे में पड़ जायेगा। बैंक अपने व्यवसाय की हानि नहीं चाहते थे। जिन विदेशियों ने बन्दरगाह नगरों में डाक सेवा को स्थापित किया वे विदेशी डाक सेवा को मजबूती से अपने स्वयं के नियन्त्रण में रखना चाहते थे।

15.3.1 आधुनिक शिक्षा का प्रारम्भ

स्वयं को मजबूत करने की इच्छा के साथ विदेशी भाषा के स्कूलों की स्थापना की गई थी, लेकिन इसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रवृत्तियों का उदय हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इन नवीन स्कूलों की स्थापना में वैज्ञानिक खोजों को प्रसारित करने का कोई उद्देश्य न

था। लेकिन इन संस्थाओं के द्वारा उन गैर चीनी विचारों की स्पष्ट तौर पर अभिव्यक्ति हुई जिनका प्रसार 19वीं सदी के अन्तिम दशकों में तेजी के साथ हुआ था। एक थोड़ी संख्या में स्कूलों को, सीमित लोगों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करने या अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिये खोला गया था। 1880 में कैन्टन में पश्चिमी ज्ञान की संस्था का प्रारम्भ किया गया। त्येनसिन में 1880 में एक टेलिग्राफ स्कूल, 1881 में एक नौसेना एवं सेना मेडिकल स्कूल तथा 1885 में एक सैनिक स्कूल खोला गया। सन् 1872-1881 के बीच में अमेरिकी शिक्षा प्राप्त करने के लिये 120 चीनी युवकों को संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्टफोर्ड भेजा गया। इसी के समानान्तर एक दल को 1876 में शिक्षा प्राप्त करने के लिये फ्रांस भेजा गया। पश्चिमीकरण में हिस्सेदारी करने के कारण इन कार्यक्रमों की गम्भीर आलोचना की गई। यह एक महत्वपूर्ण घटना है कि विदेश की इस शिक्षा से लाभान्वित होने वाले येन फू जैसे लोगों ने 19वीं सदी के अन्तिम वर्षों में चीन के बौद्धिक एवं राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण योगदान किया। लेकिन सन् 1881 में समुद्र पार शिक्षित करने के कार्यक्रम का परित्याग कर दिया गया। ऐसा करने का कारण अमेरिका की नीति थी। अमेरिका ने स्वयं ही चीन वासियों एवं अन्य एशियाई वासियों के अमेरिका में आने पर रोक लगा दी। कैलिफोर्निया में जबरदस्त चीन विरोधी आंदोलन के कारण ऐसा करना पड़ा। फिर भी 19वीं सदी के अन्तिम दशक में बहुत से चीनी युवक विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश करते रहते थे।

15.3.2 नवीनीकरण का विरोध

प्रारम्भ से ही सरकारी क्षेत्रों में **यांगवू** आंदोलन का लगातार विरोध किया जा रहा था। इसका सबसे कड़ा विरोधी मंगोल अधिकारी के-रेन था। वह सम्राट के शिक्षक तथा हानलिन अकादमी के अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों पर था। कन्फ्यूशियवादी ग्रंथों का प्रयोग करते हुए उसने तर्क देने का प्रयास किया कि मात्र विज्ञान एवं तकनीकी राज्य की समस्याओं का हल नहीं कर सकते। **यांगवू** आंदोलन ने आंतरिक विद्रोहों तथा विदेशी घुसपैठ को रोकने के लिये हथियार निर्माण की नीति का समर्थन किया था और इस कारण से यह बहस बहुत आगे नहीं बढ़ी।

लेकिन यह विवाद उस समय और गहरा हो गया जब इन नवीन परिवर्तनों को उद्योग, संचार एवं शिक्षा जैसे दूसरे क्षेत्रों में लागू करने का प्रयास किया गया। नवीनीकरण के प्रति विरोध को मशीनीकरण तथा आधुनिक अर्थव्यवस्था के प्रति जन विद्रोह से बल मिला। रेलवे के विरोध में होने वाले दंगों के कारण यह तर्क दिया गया कि आधुनिक तकनीकी को लागू करने में कानून एवं व्यवस्था को खतरा था। लेकिन यहां पर यह भी याद रखना चाहिये कि इन परिवर्तनों का जन विरोध जहाँ एक ओर धार्मिक विश्वासों एवं अन्य विश्वासों के कारण उत्पन्न हुआ था वहीं पर इस विरोध के पीछे यह डर भी छिपा था कि मशीनें आम जनता के जीवन यापन के साधनों को भी नष्ट कर देंगी। यह आधुनिकता विरोधी प्रतिक्रिया राज्य एवं व्यवस्था को परंपरावादी बनाये रखने के लिये एक संघर्ष था। उनको भय था कि नवीन परिवर्तनों के द्वारा राज्य एवं व्यवस्था को कमजोर कर दिया जायेगा और आगे चलकर वो-रैन तथा दूसरों का यह भय ठीक साबित हुआ।

15.3.3 पुनर्स्थापन तथा स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलनों के परिणाम

1) पुनर्स्थापन ने कुलीनों की राजनीतिक तथा सामाजिक भूमिकाओं को एक बार फिर से लागू कर दिया।

2) 19वीं सदी के ताइपिंग तथा दूसरे जन विद्रोहों का दमन करने के लिये राज्य ने प्रांतीय कुलीनों द्वारा बनाये सैनिक बलों का प्रयोग किया था और इसी के द्वारा क्षेत्रीय सैनिकवाद का बीजारोपण हुआ था। ये नयी सेनायें परम्परागत साम्राज्यिक सेनाओं से बेहतर थीं और अपनी क्षमता के कारण राज्य के लिये एक खतरा हो सकती थी। 20वीं सदी के प्रारम्भ में यह खतरा और भी गहरा हो गया।

3) इतिहासकार इस पर सहमत हैं कि राज्य द्वारा स्थापित किये गये उद्योग-धन्धे चीन में आधुनिक पूंजीवाद के उदय का चित्रण करते हैं। अधिकारियों के रूप में पूंजीपतियों, सहयोगी पूंजीपतियों, सौदागरों, कुलीनों एवं भू-स्वामियों का उदय एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन था।

4) अनुवाद तथा प्रकाशन के क्षेत्र में नवीन बौद्धिक एवं साहित्यिक रुझानों ने चीन के बुद्धिजीवियों के क्षितिज को और विस्तृत किया। धीरे-धीरे चीनी विद्वान इस तथ्य के प्रति

जागरूक हो रहे थे कि पश्चिमी ज्ञान, पश्चिमी सम्पन्नता तथा शक्ति का आधार केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं बल्कि कुछ और भी था।

लेकिन अन्तिम विश्लेषण से यह भी स्पष्ट है कि इन प्रयासों के परिणाम थोड़े ही समय के लिये थे। लक्ष्य पूर्ण रूपांतरण का न था बल्कि नवीनीकरण को बनाये रखना मात्र था। राज्य शक्ति अभी भी छोटे प्रबुद्ध शासक वर्ग के हाथों में ही केन्द्रित थी। 1880 के दशक में यह व्यापक तौर पर विश्वास किया जाता था कि विदेशी संबंधों पर नियन्त्रण करने के लिये सीमित प्रयास किये गये। 19वीं सदी के अन्तिम दो दशकों में लगातार यह तथ्य तूल पकड़ता गया कि विदेशी उपस्थिति पर कोई नियन्त्रण नहीं था। **यांगवू** आंदोलन ने उद्योगों के प्रारम्भ करने तथा अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ तो कर दिया था, परन्तु यह चीनी अर्थव्यवस्था को वास्तव में मजबूत नहीं कर पाया था। न राज्य ही इतना मजबूत हो पाया कि वह साम्राज्यवादियों की चुनौतियों का सामना कर पाता और न उसमें अपने शोषित किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता थी।

बोध प्रश्न 2

1) आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर 10 पंक्तियों में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) पांच पंक्तियों में पुनर्स्थापन तथा स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलनों के परिणाम बताइये।

....
....
....
....
....

15.4 1898 का सुधार आंदोलन

1894-95 के चीन-जापान युद्ध तथा उसमें चीन की पराजय ने **यांगवू** आंदोलन की पूर्ण असफलता को स्पष्ट कर दिया। कोरिया में जापान के हाथों चीन की अपमानपूर्ण पराजय ने चीन के सैन्यीकरण के खोखलेपन को उजागर कर दिया। चीन-जापान युद्ध की समाप्ति 1895 की शिमोनेसेकि की संधि के रूप में हुई और इस संधि के तुरन्त बाद विदेशी उद्योग एवं पूंजी की भरमार ने आर्थिक विकास पर सरकारी नियन्त्रण की क्षमता के ऊपर प्रश्न-चिह्न लगाया।

संक्षेप में इस युद्ध ने पुनर्स्थापन के बाद प्रारंभ किये गये विदेशी संबंधों के औचित्य से संबंधित और राज्य द्वारा प्रस्तावित सैनिक तथा आर्थिक आधुनिकीकरण से संबंधित अनेकों प्रश्नों को उठाया। मूल रूप से इसने चीन के बिखर जाने और औपनिवेशीकरण की संभावना को बलवती कर दिया।

जापान के हाथों चीन की पराजय **यांगवू** आंदोलन की असफलता का अकाट्य सबूत है। विदेशी शक्तियों के प्रसार में और 'चीनी तरबूज के टुकड़े करने' की पृष्ठभूमि में गहन

राजनीतिक असन्तोष के समय में एक बार फिर सुधार के लिये मांगे उठने लगीं।

शिमोनेसेकि की संधि की शर्तों के विरुद्ध हिंसात्मक प्रतिक्रिया हुई। संधि की शर्तें पूर्ण रूपेण जापान के पक्ष में थीं। चीन ने कोरिया के ऊपर अपने अधिकार का परित्याग कर दिया और ताइवान, पेसकेडोरस एवं लियाओतुंग द्वीपों को जापान के अपने अधीन कर लिया।

सम्राट के प्रभुत्व के विषय में 1890 के वर्षों से ही प्रश्नों को उठाया जाने लगा था। 1894 में कैन्टन निवासी सन यात सेन के द्वारा **सिंगझोन्गुई** (दि रिवाइव चाइना सोसायटी) के नाम की एक गुप्त संस्था का गठन किया गया। सन यात सेन ने सम्राट को सत्ता से हटाने के लिये एक विद्रोह को भी संगठित करने का प्रयास किया। लेकिन षडयंत्र का भेद खुल गया। सनयात सेन ने जापान में शरण ली। ताइवान के द्वीप को जापान के अधीन कर देने का विरोध हजारों कुलीनों ने सम्राट को स्मृति-पत्र देकर किया।

इस तरह के उफान ने कांग-यू-वी जैसे विद्यार्थियों को भी बहुत अधिक प्रभावित किया। कांग-यू-वी उस समय पीकिंग में राजधानी की एक परीक्षा में बैठने के लिये आया हुआ था और वह गोंग डंग का निवासी था और विद्वान भी। उसने सम्राट गोंग शू (1875-1909) को एक मांग-पत्र को 10,000 शब्दों में लिखा। इस मांग पत्र पर 1300 स्नातक परीक्षार्थियों ने हस्ताक्षर किये। ये परीक्षार्थीगण इस समय अपनी परीक्षा देने के लिये पीकिंग में ठहरे हुए थे। इस महत्वपूर्ण मांग-पत्र में बहुत सी मांगे थी:

1) इस मांग-पत्र के द्वारा राजा से यह प्रार्थना की गई थी कि वह शिमोनेसेकि की संधि को पारित न करे। चीन की पराजय के लिये जो उत्तरदायी थे उनको दंड दिया जाये।
2) सेना को पूरी तरह से पुनर्संगठित किया जाये और उसको आधुनिक बनाया जाये।
3) धन संबंधी मसले, बैंकिग व्यवस्था तथा डाक व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करते हुए उनको सुधारा जाये।
4) सरकार प्राइवेट उद्योग एवं वाणिज्य को प्रोत्साहित करे।
5) कृषि विज्ञान, आधुनिक विज्ञान और अन्य तकनीकी विषयों का अध्ययन किया जाये।
6) स्कूलों एवं पुस्तकालयों का निर्माण हो।
7) परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया जाये।
8) एक महत्वपूर्ण मांग यह थी कि एक निर्वाचित परिषद बनायी जाये तथा यह परिषद राजनीतिक एवं आर्थिक मामलों को निपटाये। जिस समय गोंगयू सम्राट ने इस मांग-पत्र को देखा तब तक शिमोनेसेकि संधि पर हस्ताक्षर हो चुके थे। लेकिन कांग के इस मांग-पत्र को सभी प्रांतीय गवर्नरों को प्रेषित कर दिया गया। अब नवीन प्रस्तावित सुधारों के कारण प्रांतों में स्थान-स्थान पर अध्ययन संस्थायें खुल गई थीं।

सन् 1895 ई. में क्यांगशूई हुई (स्वयं अध्ययन के लिये संस्था) का प्रारम्भ किया गया। इसने भाषाओं का आयोजन किया और बिना किसी मूल्य के अध्ययन के लिये सामग्री का वितरण किया गया। नवम्बर 1895 में इस सोसायटी को यह कहते हुए बंद कर दिया गया कि यह विध्वंसात्मक गतिविधियों का केन्द्र बन चुकी थी। इस तरह की दूसरी संस्थाओं को झिल्ली, शंघाई, हुनान एवं शैनक्सि जैसे अन्य संस्थाओं पर प्रारम्भ किया गया। प्रेस का प्रसार हो जाने से इन सुधारवादी विचारों का फैलाव काफी व्यापक हो गया था। 1896-1898 के दो वर्षों में 25 से अधिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इन पत्रिकाओं में सबसे महत्वपूर्ण **शिवू बाओ** (तात्कालिक मामलों की पत्रिका) थी। इसका प्रकाशन शंघाई में कांग यू-वी के कुछ शिष्यों द्वारा किया गया था। **गौवेने बाओ** (राष्ट्रीय समाचार पत्र) का प्रकाशन फूझाओ के शस्त्रागार के भूतपूर्व स्नातक यान फू के द्वारा किया गया था। सुधार गतिविधियों के सबसे सक्रिय केन्द्र निचले वांगजी, गौंगडाग, हुनान एवं झिली क्षेत्रों में स्थित थे।

15.4.1 सुधार आंदोलन के मुख्य विचारक

कांग यू-वी

सबसे महत्वपूर्ण विचारक कांग यू-वी (1858-1927) था। उसका जन्म गौंग जेंग प्रांत में नानहाय में हुआ था। कांग ने परम्परागत शिक्षा प्राप्त की। जब 1881 एवं 1879 में वह शंघाई एवं हांगकांग गया तब उसने पश्चिमी ज्ञान को भी सीख लिया। कांग यू-वी के विचारों को दो बड़ी रचनाओं से समझा जा सकता है:

अ) **शिन स्यू वी जींग काओ** (सिन के शासन काल में संकलित की गई श्रेष्ठतम रचनाओं का अध्ययन।

ब) **कोंच-जी गाय झी काओ** (एक सुधारक के रूप में कन्फ्यूशियस) चीनी कन्फ्यूशियसवादी विचारों की प्रामाणिकता के लिये चीन के श्रेष्ठतम विद्वानों के बीच चली लम्बी बहस से निष्कर्ष निकालते हुए कांग ने स्वयं को हान काल की रचनाओं पर आधारित किया।

हान काल की कन्फ्यूशियसवादी रचनाओं को प्रामाणिक माना जाता है। इन रचनाओं के द्वारा कांग ने स्वयं को अपने समकालीन विद्वानों और पुनर्स्थापिन काल के विद्वानों से बुनियादी तरीके से अलग कर लिया। उसने तर्क दिया कि कन्फ्यूशियसवाद इन नये ग्रंथों में निर्भय खोजी के रूप में उभर कर आता है। कन्फ्यूशियसवाद सुधार का विरोधी नहीं है और वह परिवर्तन करने की आज्ञा भी देता है। इस तरह से कांग द्वारा कन्फ्यूशियस के अध्ययन ने स्वयं की परम्परा की सीमाओं के अन्दर एक परिवर्तन के मार्ग को प्रशस्त किया। 19वीं सदी के अन्त में इसका बड़ा व्यापक प्रभाव हुआ। कांग ने अपनी एक अन्य बड़ी रचना **दातोंग शू** (महान एकता की पुस्तक) में एक ऐसे उपयोगितावादी दृष्टिकोण को विकसित किया जिसके अनुसार अपने अन्तिम चरण में सभी प्रकार की असमानताएं तथा सरकारें समाप्त हो जायेगी। यह एक ऐसा युग होगा जिसमें मानव सौहार्दता एवं प्रसन्नता के साथ रह सकेगा।

कांग का योगदान उसकी इसी योग्यता में निहित था कि उसने सुधारों की मांगों को स्वयं चीनी परम्परा के ढांचे के अन्दर फिट कर दिया था। लेकिन कई मायनों में कांग भी **यांगवू** आंदोलन के नेताओं जैसा ही था।

कन्फ्यूशियसवाद की एक सुधारवादी विचारधारा के रूप में की गई मौलिक परिभाषा के बावजूद भी कांग कन्फ्यूशियसवादी मूल्यों का अनुसरण करने के प्रति समर्पित बना रहा और वह चीन के पुनरूत्थान में कुलीन वर्ग की भूमिका को भी स्वीकार करता था। उसने प्रबुद्ध वर्ग से आग्रह किया वह नेतृत्व की भूमिका को स्वीकार करे और सुधारों को निर्देशित करे और ऊपर की ओर से परिवर्तन करे। वह यह भी मानता था कि चीन का सम्राट भी उसी तरह की भूमिका अदा कर सकता था जैसी की मेजी सम्राट ने जापान में और पीटर महान ने रूस में राज्य के नियन्त्रण एवं निर्देशन में सुधारों का प्रारम्भ करने में की थी।

यान फू एवं तान सी तोंग

यान फू ने हक्सले की पुस्तक **इवोल्यूशन एण्ड एथिक्स**, एडम स्मिथ की पुस्तक **दि वेल्थ ऑफ नेशन्स** तथा हरबर्ट स्पेन्सर की पुस्तक **ए स्टेडी ऑफ सोशोलोजी** के अनुवाद के द्वारा पश्चिमी विचारों को फैलाने में निर्णायक भूमिका अदा की। डार्विन के तर्कों का प्रयोग करते हुए यान फू ने तर्क दिया कि चीन का सम्पूर्ण पुनर्निरीक्षण किया जाये और उसने सुझाव दिया कि विश्व की नयी राजनीतिक वास्तविकता में केवल शक्तिशाली ही जीवित रह पायेगा। यद्यपि यान फू प्रत्यक्ष तौर पर राजनीति में नहीं था किन्तु उसके अनुवादों का चीन पर गहरा प्रभाव पड़ा

तान सी तोंग ने प्रत्यक्ष तौर पर न केवल शासक वर्ग की रूढ़िवादिता की कड़ी आलोचना की बल्कि कन्फ्यूशियसवाद के नैतिक नियमों की भी आलोचना की। उसने चीन पर मांचू वंश के प्रभुत्व को भी समाप्त करने का आह्वान किया। मांचू वंश एवं चीन के बीच के विवाद का अन्तिम शीर्षक 19वीं सदी के अन्त में राष्ट्रवादी गतिविधि के लिये मुख्य मुद्दा बन गया। इसी के कारणवश अन्ततः 1911 की चीनी क्रांति हुई। इसका विवरण आगामी भाग में किया जायेगा।

15.4.2 सुधार आंदोलन का प्रभाव

साम्राज्यवादी देशों के स्वार्थों तथा प्रभाव क्षेत्रों का प्रसार तेजी के साथ हुआ जिससे चीन का बिखर जाना काफी संभावित प्रतीत होता था। पश्चिमी शक्तियों ने अपनी राष्ट्रीयताओं के अनुसार अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों को पारस्परिक पहचान के द्वारा आपस में बांट लिया। इस प्रक्रिया पर सम्राट का बहुत कम नियन्त्रण था।

कांग ने अपने पांचवे स्मृति-पत्र में गौंगशू सम्राट को सम्बोधित करते हुए राजनीतिक सुधारों के लिये निवेदन किया और यह तर्क भी दिया कि यही एक मात्र ऐसा रास्ता है जिससे चीन एवं शासक वंश को बचाया जा सकता है। अब कांग के स्मृति-पत्रों को राजा तक पहुंचाने की आज्ञा दे दी गई थी। 11 जून, 1898 को गौंगशू सम्राट ने सुधार कार्यक्रम की जो घोषणा की उसी से ही सुधार प्रयास का प्रारम्भ हुआ।

बोध प्रश्न 3

ठीक उत्तर का पता लगाइए:

1) 1894 में **शिंगझोंगहाय** (दि रिवाइव चाइना सोसायटी) के नाम से पुकारे जाने वाली गुप्त सोसायटी की स्थापना की गई:

   अ) माओं त्से-तुंग के द्वारा

   ब) युआन शि-काइ के द्वारा

   स) सन यात-सेन के द्वारा

   द) सिन फेंग के द्वारा

2) सुधार आंदोलन के मुख्य विचारक कौन थे? लगभग 10 पंक्तियों में उनके विचार लिखें।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

15.5 सौ दिनों के सुधार

इन सुधारों का यह नाम जिस कारण से रखा गया था वह यह कि ये 11 जून 1898 से16 सितम्बर, 1898 तक अर्थात 103 दिन में लागू किये गये थे। कांग और उसके सहायकों कों कार्यक्रम में सहायता करने के लिये पीकिंग बुलाया गया। कांग को जोंगली यानेन का सचिव नियुक्त किया गया।

15.5.1 सुधार का क्षेत्र

शाही आज्ञापत्रों में प्रशासन, शिक्षा और अर्थव्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया। कार्यरहित अधिकारियों तथा पदों को समाप्त कर दिया गया तथा मांचूओं को दी जाने वाली सभी प्रकार की आर्थिक सहायता को भी समाप्त कर दिया गया। परम्परागत रीति से बुनियादी तौर पर अलग होते हुए, सभी अधिकारियों एवं जनता को यह आज्ञा दे दी गई कि सीधे-सीधे सुझावों को सम्राट को सम्बोधित करते हुए भेजें। ऐसा इसलिए किया गया जिससे सम्राट को राजमहल से बाहर निकाल कर उसका जनता के साथ सीधा-सीधा सम्पर्क कायम हो जाये। पुराने शिक्षा केन्द्रों को स्कूलों में परिवर्तित कर दिया गया। पीकिंग विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। विज्ञान एवं राजनीति को परीक्षा के विषयों के रूप में शामिल कर दिया गया।

आठ हिस्सों वाली जटिल निबंध प्रणाली को समाप्त करते हुए परीक्षा पद्धति का आधुनिकीकरण करने का प्रयास किया गया। इस निबन्ध का स्वरूप निबन्ध लेखन की एक कठोर शैली पर आधारित था। यह निबन्ध सदियों से निबन्ध के स्वरूप एवं शैली से संबंधित होता था किन्तु इसके अन्तर्गत लेखन के सार का कोई महत्व न था।

आधुनिक वैधानिक व्यवस्था को लागू करने के लिये कार्यालयों को खोला गया और राज्य के वित्तीय प्रबन्धन को भी दुरुस्त करने के प्रयास हुए। कृषि, उद्योग तथा व्यापार की देखभाल करने के लिये मन्त्रालयों का निर्माण किया गया। प्रांतीय अर्थव्यवस्थाओं को स्थायित्व प्रदान करने के लिये योजनाओं को बनाया गया था और **चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स** का प्रारम्भ किया गया।

इन उपायों का लक्ष्य राज्य की सत्ता को उखाड़ फेंकना नहीं था। इन सबके बावजूद भी मांचू, चीनी अधिकारीगण तथा विद्वानों की जमात के बीच इन सुधारों को लेकर एक चिन्ता व्याप्त थी। इन विद्वानों ने परीक्षाओं की तैयारी में सम्पूर्ण जीवन लगा दिया था और अब वे इसके लिये चिन्तित थे कि नयी परीक्षा पद्धति एवं प्रस्तावित शिक्षा व्यवस्था में उनकी स्थिति कैसी होगी।

15.5.2 प्रतिक्रिया

सुधार आंदोलन के विरोधियों को महासम्राज्ञी दावागर त्सूत्सी के रूप में एक जबरदस्त समर्थक मिल गया। सेनापति युआन शि-काइ की सहायता से महारानी ने गौंगशू सम्राट को बन्दी बना लिया और 21 सितम्बर, 1898 को सभी सुधारवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया। कांग यू-वी और उसका घनिष्ट सहयोगी तथा शिष्य लियांग की-चाओ विदेश भाग गये। तान सी-तोंग तथा अन्य पांच सुधारवादियों को फांसी दे दी गई। तान ने विदेश जाने से इंकार करते हुए यह कहा : "बिना रक्त बहाये किसी भी देश में सुधारों को पूरा नहीं किया जा सका। चीन में अभी तक इसके लिये किसी ने कोई खून नहीं बहाया है। ऐसा करने वाला मैं प्रथम हो जाऊंगा।"

सभी सुधारों को पलट दिया गया। केवल पीकिंग विश्वविद्यालय को जारी रहने दिया गया।

सुधार प्रयास में स्वयं में बहुत से विरोधाभास निहित थे। सुधारकर्ताओं का मुख्य ध्यान चीन के प्रबुद्ध वर्गों पर ही केन्द्रित था। प्रस्तावित राजनीतिक सुधार ऐसे थे कि वे स्वयं ही शासक प्रबुद्ध वर्ग के हितों को निरन्तर पूरा करते रहते। समाज के जीवन निर्वाह के मुख्य साधन कृषि पर कोई ध्यान न दिया गया। सुधारकों ने जिस अवैध विदेशी आधिपत्य का विरोध करने की प्रतिज्ञा की थी और इससे ऐसा प्रतीत होता था कि वे उस पश्चिमीकरण का विरोध कर रहे थे जिसकी उन्होंने पुरजोर वकालत की थी।

1898 के सुधार आंदोलन ने जनता के बहुत से समूहों पर किसी न किसी रूप में अपना प्रभाव छोड़ा था। सुधारकों को एक समूह यह मानने लगा था कि राजनीतिक परम्परा एवं इसकी व्यवस्था के अन्तर्गत ही धीरे-धीरे राजनीतिक सुधारों को किया जाये। कुछ अन्य को यह विश्वास हो गया कि राजा चीन की समस्याओं का हल करने में पूर्ण रूपेण अयोग्य था और अपनी इस समझ को उन्होंने राजनीतिक संगठनों तथा अन्य संस्थाओं तक पहुंचाया। इन सभी लोगों को बीसवीं शताब्दी में काफी समर्थन मिला और इनके अनुसार अब चीनी समस्याओं का क्रांति के अतिरिक्त कोई अन्य समाधान न था।

बोध प्रश्न 4

1) सौ दिन के सुधार की प्रतिक्रिया पर 10 पंक्तियां लिखें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) रिक्त स्थान को भरें।

   i) आठ हिस्सों वाली निबंध प्रणाली को .... (जारी रखा गया/समाप्त कर दिया गया)।

   ii) सुधार प्रयास के विरुद्ध .... (थे/नहीं थे)।

   iii) सम्राज्ञी दावागर त्सूत्सी सुधारों को .... (कुचल डाला/बढ़ावा दिया)।

15.6 सारांश

1850 के बाद के दशकों में चीनी समाज चिंग शासकों के अन्तर्गत एक संकट के दौर से गुजर रहा था। साम्राज्यवादी शक्तियों के विस्तार तथा आंतरिक उथल-पुथल ने चीनी राज्य को लगभग पतन के कगार पर ला खड़ा किया। इस संकट से निपटने के लिये चिंग सरकार ने सुधारों की एक श्रृंखला की शुरुआत की। विद्वानों ने सुधारों के इस काल को पुनर्स्थापन का काल माना। इस काल में तोंगुसी का शासन काल (1862-71) भी शामिल होने के कारण इसे तोंगझी पुनर्स्थापन का काल भी माना जाता है।

तोंगझी पुनर्स्थापन का उद्देश्य मात्र पुरानी व्यवस्था को बनाये रखना ही नहीं था परंतु बाहरी शक्तियों तथा आंतरिक विद्रोहों से उत्पन्न संकट के कारण एक नये राष्ट्रीय कार्यक्रम का निर्माण करना भी था। स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन इस पुनर्स्थापन का ही एक हिस्सा था। इसका सार आंशिक आधुनिकीकरण की नीति में निहित था।

कृषि अर्थव्यवस्था और राज्य प्रशासन तंत्र की पुनर्स्थापना को पूरी ईमानदारी के साथ लागू किया गया। पर कुल मिला कर किसानों को एक सामाजिक वर्ग की क्षमता में, इस नीति से कोई फायदा नहीं मिला।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था के कन्फ्यूशियसवादी सिद्धांतों पर ज़ोर दिया गया। राज्य की नागरिक प्रशासन व्यवस्था को बहाल किया जा सका और ऐसा नई परीक्षा प्रणाली से आये योग्य अधिकारियों के कारण ही संभव हो पाया। कन्फ्यूशियसवादी सिद्धांतों के अनुरूप नौकरशाही को पुनर्संगठित किया गया। कन्फ्यूशियसवादी विचारधारा और ज्ञान के द्वारा राज्य के राजनीतिक तथा प्रशासनिक ढांचे को मजबूत किया गया।

इस काल के दूसरे चरण में चीनियों ने अपने देश को धनी और शक्तिशाली बनाने के प्रयास किये। यद्यपि थोड़ी आर्थिक वृद्धि तो हुई, पर ये प्रयास अधिक सफल न हो सके क्योंकि तोंग झी पुनर्स्थापन के अन्तर्गत चीन के पारंपरिक व्यापार को अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया गया। फिर भी इस समय में चीनी समाज में कुछ नये परिवर्तन अवश्य हुए। संचार की दशा में मुख्य रूप से यातायात और डाक-तार के क्षेत्र में, देश भर में सुधार आया। डाक-तार सुविधाओं के विकास के लिये किये गये गंभीर प्रयासों का काफी सक्रिय विरोध हुआ। अधिकतर नेताओं का यह मानना था कि स्टीम से चलने वाले पानी के जहाज, रेलवे तथा टेलीग्राफ व्यवस्था की शुरुआत से परंपरागत अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक ढांचे को नुकसान था तथा पाश्चात्य तौर तरीकों को अपनाने में राज्य की सुरक्षा को भी खतरा हो सकता था।

जापान के साथ युद्ध में चीन की पराजय ने चीनी लोगों के बीच में कई तरह की प्रतिक्रिया पैदा की। युद्ध के बाद 1895 की शिमोनेसेकि की संधि के घातक परिणाम हुए। लगभग पूरे शासन तंत्र को धक्का पहुंचा और चीन औपनिवेशीकरण की संभावनाओं के और भी नजदीक पहुंच गया। लेकिन संकट के इस दौर में सभी चीनी नेताओं ने पूरी एकता दिखाई और राजनीतिक परिवर्तन के लिये एकजुट होकर प्रयास किया।

पहला प्रयास सन-यात-सेन ने किया। चिंग वंश के पतन के लिये एक गुप्त संस्था का निर्माण किया, पर इस प्रयास में सफलता नहीं प्राप्त हुई। सन-यात-सेन की पूरी योजना ही असफल हो गई। कांग-यू-वी के शासन तंत्र को पुनर्गठित करने के प्रस्तावों के भी संतोषजनक परिणाम न निकले। विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के अधिक फैलाव के कारण, चीन बिल्कुल पतन के कगार पर पहुंच गया।

संकट की इस घड़ी में कांग तथा सुदृढ़ीकरण आंदोलन के अन्य विचारकों ने यह समझ लिया कि सिर्फ राजनीतिक सुधार ही चीन को बचा सकते हैं। सौ दिन के सुधारों ने कई प्रकार के मुद्दों को उठाया और प्रशासन, शिक्षा तथा अर्थव्यवस्था पर काफी जोर दिया गया लेकिन इन सुधार प्रयासों का उद्देश्य राज्य सत्ता को उखाड़ फेंकना नहीं था। समाज के विभिन्न वर्गों ने भी इन सुधारों का विरोध किया। इन सुधारों की असफलता के कारण कई और विभिन्न हैं। नई परीक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शोषक सुधार प्रयासों में कई छात्रों का भविष्य बरबाद कर दिया। सुधारवादियों ने विदेशियों के अतिक्रमण पर भी कोई रोक नहीं लगाई। इन सब कारणों से इन सुधारों का असफल होना अवश्यंभावी ही था। यद्यपि सुधारों का यह प्रयास संक्रमणकालीन ही था, लेकिन इसने देश पर अपना प्रभाव छोड़ा। इसने राजनीतिक परिवर्तन की तलाश में चीन के शिक्षित वर्ग को एक दशा दी और उनका मार्गदर्शन किया।

15.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) दो मुख्य नीति अवयव थे चिंग सत्ता का पुनर्स्थापन और स्वयं सुदृढ़ीकरण। इनका मुख्य उद्देश्य था राज्य की शक्ति और प्रतिष्ठा को वापस लाना और आंशिक आधुनिकीकरण।

2) तोंग झी पुनर्स्थापन द्वारा प्रशासन को पुनर्गठित करने के कई प्रयास किये गये। नौकरशाही में योग्य व्यक्तियों की भर्ती की गई। राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचों को मजबूत करने का प्रयास कन्फ्यूशियसवाद पर जोर देते हुए किया गया। देखें उपभाग 15.2.3.

3) तोंग-वेन-क्वान विदेशी भाषाओं के स्कूल थे। उन स्कूलों की स्थापना तकनीकी विषयों और विदेशी भाषाओं की जानकारी देने के लिये हुई थी। देखें उपभाग 15.2.5.

बोध प्रश्न 2

1) सुदृढ़ीकरण आंदोलन के अन्तर्गत विदेशी स्कूलों की स्थापना ने शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रवृत्तियों की शुरुआत की। इससे गैर चीनी और पश्चिमी विचारों की ओर चीनियों का झुकाव हुआ।

2) पुनर्स्थापन ने कुलीनों की राजनीतिक और सामाजिक भूमिका को मजबूती प्रदान की। नई बौद्धिक और साहित्यिक प्रवृत्तियों ने चीनियों के ज्ञान का प्रसाय किया। देखें उपभाग 15.3.3.

बोध प्रश्न 3

1) स

2) कांग-यू-वी, यान फू, और तान सि तोंग सुधार आंदोलन के मुख्य विचारक थे। कांग ने कन्फ्यूशियसवाद को प्राचारित किया और हान काल के नये ग्रंथों पर अपने विचारों को आधारित किया।

बोध प्रश्न 4

1) सौ दिनों के सुधार की युआन-शि-काई द्वारा आलोचना की गई और इसकी काफी गम्भीर प्रतिक्रिया हुई। कई सुधारकों को गिरफ्तार कर लिया गया और कुछ बाहर भाग गये। पीकिंग विश्वविद्यालय की स्थापना को छोड़कर सुधार के सभी प्रयासों को वापस ले लिया गया। देखें भाग 15.5.

2) i) समाप्त कर दिया गया।

   ii) नहीं थे।

   iii) कुचल डाला।